शोध प्रतिवेदन

"जयपुर जिले के सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों व लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन"

निर्देशिका
डॉ. शिप्रा गुप्ता
(रीडर)

प्रस्तुतकर्त्री
रश्मि शर्मा
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)
(सत्र 2015-17)

प्रस्तावना –

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा बौद्धिक सम्पदा का धनी होने के कारण उसकी प्रकृति जिज्ञासु है। उसके मन में अनेक इच्छायें उत्पन्न होती हैं जिनकी पूर्ति मानसिक एवं शारीरिक प्रयत्न द्वारा करता है। इन प्रयत्नों के माध्यम से अनेक छानबीन, खोज तथा शोध कार्य करता रहता है। व्यक्ति शोध कार्य करके अपनी जिज्ञासा की पूर्ति करता है तथा भविष्य के लिये सुझाव प्रदान करता है।

शोध कार्य के लिये निश्चित उद्देश्य होते हैं जिनकी सहायता से शोधकर्त्ता अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। शोध कार्य में यह आवश्यक होता है कि तथ्यों के आधार पर शोध कार्य को अन्तिम रूप प्रदान किया जावे।

शोध कार्य में तथ्यों के निर्वचन एवं विश्लेषण के बाद जो परिणाम प्राप्त होते हैं उनके आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं। निष्कर्षों का सामान्यीकरण किया जाता है जिसमें सामान्य व्यक्ति भी इसको सरलता से समझ सके तथा इसके

निष्कर्षों में विश्वसनीयता, वैद्यता, शुद्धता व सत्यता में वृद्धि होती है। शिक्षा अनुसन्धान के क्षेत्र में ऐसे निष्कर्ष अत्यन्त मूल्यवान व उपयोगी होते हैं। यह शोध कार्य का अन्तिम परन्तु आवश्यक बिन्दू होता है।

अतः प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने व्यापक दृष्टिकोण एवं विश्लेषण का प्रयोग करते हुये संकलित किये गये आँकड़ों के आधार पर निष्कर्ष एवं सुझावों का वर्णन इस अध्याय में किया है।

हर युग के अनुसार समय की आवश्यकता परिवर्तित होती है। शिक्षा मूल्यों के साथ–साथ जीवनोपयोगी व व्यक्ति के विकास में भी सहायक है। राष्ट्रीय परम्परा के अनुसार शिक्षा प्रदान करना व बालक का सर्वांगीण विकास करना तथा भारत के संविधान में उल्लेखित मूल्यों को प्राप्त करना है।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति एवं उसके नागरिकों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है, इसलिये सभी राष्ट्र अपने देश के नागरिकों के लिये उचित शिक्षा की व्यवस्था करने का प्रयास करते है। हमारे देश में भी बालक के विकास के अनुरूप निर्धारित विभिन्न स्तरों की शिक्षा व्यवस्था में प्राथमिक शिक्षा का स्थान प्रमुख है, क्योंकि यह बालक की शिक्षा की आधारशिला है।

शिक्षा का अर्थ बालक के उन सभी अनुभवों से है जिनका प्रभाव उस पर जन्म से मृत्यु तक पड़ता है अर्थात् शिक्षा वह अनियन्त्रित वातावरण है जिसमें रहते हुये बालक अपनी रूचि के अनुसार स्वतन्त्रतापूर्वक नाना प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है।

अध्ययन का औचित्य –

भारतीय शिक्षा व्यवस्था का एक दुखद पहलू यह है कि मानव विकास के क्षेत्र विशेष में शिक्षा की स्थिति बहुत दयनीय है। भारतीय गणतंत्र की स्थापना से लेकर अब तक की स्थिति देखते है तो विशेषतः प्राथमिक शिक्षा की गति बहुत धीमी है। 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में 296 मिलियन लोग निरक्षर है। राजस्थान सरकार द्वारा पिछले कुछ दशक से प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए अनेक प्रयास एवं योजनायें चलाई जा रहीं है जिसका उद्देश्य 6 से 14 आयु वर्ग के बालक–बालिकाओं को शिक्षा की पहुँच तक पहुचाँना है।

वर्तमान में प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए किये गये प्रयासों में से एक प्रयास है लहर परियोजना में निर्मित लहर कक्ष बच्चों के भविष्य के उज्जवल बनाने के लिए सरकार द्वारा शिक्षा में अन्य ऐसे कई महत्वपूर्ण कक्ष व आकर्षक कक्षा कक्ष तैयार किये जा रहे है। क्या इन कक्षा कक्षों का शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि पर कोई असर दिखाई दे रहा है, क्या ये योजनायें विद्यालयी नामांकन बढ़ाने में सहायक हो रही है क्या आकर्षक कक्षा कक्षों का बालकों की शिक्षा पर कोई प्रभाव पड़ रहा है अतः इन सभी प्रश्नों की खोज करना आवश्यक हो गया है।

अतः निम्न शोध का औचित्य कक्षा 1 से 2 तक के विद्यार्थियों मे सर्वशिक्षा अभियान के तहत चलायें गये कक्ष के अन्तर्गत निर्मित लहर कक्ष के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने तथा ऐसे कक्षा कक्षों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए अध्यापकों को विद्यालय स्तर पर सक्रिय योगदान देने हेतु प्रोत्साहित करना तथा किस स्तर तक विद्यालयों में नामांकन बढ़ाया जा सकता है, एवं शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि की जा सकती है ऐसे में किस प्रकार प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण किया जा सकता है इसलिए लहर कक्षा कक्ष जैसी योजना पर शोधकार्य करने की आवश्यकता उत्पन्न हुई है।

इस समस्या के औचित्य से सम्बन्धित कतिपय प्रश्न शोधकर्त्री के मस्तिष्क में उत्पन्न हुये है जो निम्न है –

- लहर कक्षा कक्ष के द्वारा शिक्षण प्रक्रिया पर कितना प्रभाव पड़ रहा है?
- लहर कक्षा कक्ष से नामांकन पर कितना प्रभाव पड़ रहा है?
- क्या लहर कक्षा कक्ष शिक्षा की गुणवत्ता वृद्धि में सहायक है?
- क्या लहर कक्षा कक्ष का लहर कक्ष विद्यार्थियों को शिक्षा की तरफ आकर्षित करता है?
- क्या इस लहर कक्ष को आगे भी निर्मित किया जाना चाहिए हाँ तो क्यों और नहीं तो क्यों नहीं?
- क्या सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालय के सामान्य कक्षा कक्ष भी शैक्षिक प्रक्रिया में प्रभावी है?

- क्या इन आकर्षक कक्षा कक्षों से विद्यालयों की शैक्षिक गुणवत्ता मे अंतर है या नहीं है?
- क्या सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों व लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों की शैक्षिक गुणवत्ता में अंतर है, है तो कितना है?

समस्या कथन :–

"जयपुर जिले के सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों व लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन"

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य :–

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है –

- प्राथमिक स्तर पर सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों ही हिन्दी विषय पर शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर पर लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयो के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय पर शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर पर सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अग्रेंजी विषय पर शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर पर लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अग्रेंजी विषय पर शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर पर सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की गणित विषय पर शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर पर लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की गणित विषय पर शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर पर सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालय तथा लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :–

प्रस्तुत अध्ययन से सम्बन्धित परिकल्पनाएँ निम्नलिखित है –

1. प्राथमिक स्तर पर सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालय व लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
2. प्राथमिक स्तर पर सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालय व लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक के विद्यार्थियों की अग्रेंजी विषय पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
3. प्राथमिक स्तर पर सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालय व लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक के विद्यार्थियों की गणित विषय पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
4. प्राथमिक स्तर पर सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों व लहर कक्षा कक्ष निर्मित सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

अनुसन्धान की विधि –

''अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य के अवलोकन करने के पश्चात् अनुसन्धानकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

सर्वेक्षण विधि –

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी भाषा के 'सर्वे' शब्द से बना है। Survey शब्द Sur तथा very शब्दों से मिलकर बना है। Sur का अर्थ है ओवर तथा very का अर्थ है टू लूक होता है। अतः इसका शाब्दिक अर्थ हुआ 'किसी घटना को ऊपर से देखना'। समाजशास्त्र के शब्दकोश के अनुसार, ''जीवन स्तर को देखना'' या उसके किसी एक पहलू के सम्बन्ध में व्यवस्थित और सम्पूर्ण संकलन एवं तथ्य विश्लेषण करना ही सर्वेक्षण है।

प्रश्नावली –

सर्वेक्षण में प्रश्नावली के दौरान सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों व लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की

शैक्षिक उपलब्धि पर अलग–अलग शिक्षण प्रक्रिया का सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव रहा।

अध्ययन के चर –

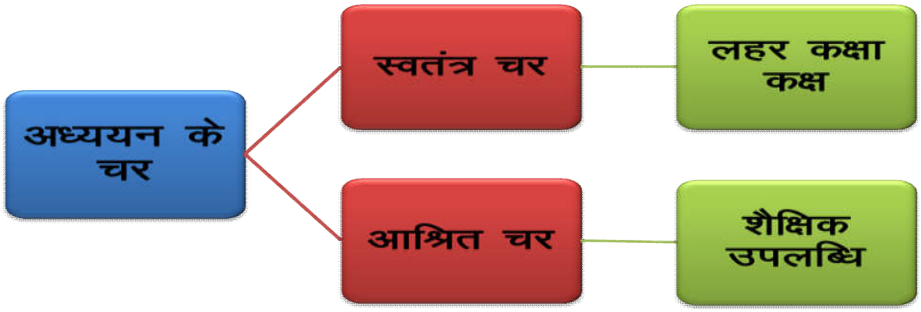

प्रदत्तों के स्त्रोत –

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा प्रदत्तों के रूप में जयपुर शहर के 5 सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालय एवं 5 लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के 50–50 विद्यार्थियों को शामिल किया गया।

प्रदत्तों की प्रकृति –

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक एवं गुणात्मक थी।

परिसीमा –

1. प्रस्तुत शोध में जयपुर शहर के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों को शामिल किया गया है।
2. इस अध्ययन में कक्षा 1 व 2 को ही शामिल किया गया है।
3. शोध कार्य हेतु राजकीय विद्यालयों को शामिल किया गया है, क्योंकि ये कक्षा कक्ष केवल राजकीय विद्यालयों में ही निर्मित है।
4. शोध कार्य हेतु प्राथमिक स्तर के 10 विद्यालय शामिल किये गये है।
5. शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग दत्त संकलन हेतु किया गया है।

जनसंख्या–

जयपुर जिले के सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालय तथा लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों का चयन जनसंख्या के रूप में किया गया है।

न्यादर्श –

न्यादर्श के अन्तर्गत यादृच्छिक विधि का प्रयोग करते हुए जयपुर जिले के प्राथमिक स्तर के 10 विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन मे न्यादर्श का विवरण निम्न प्रकार से है–

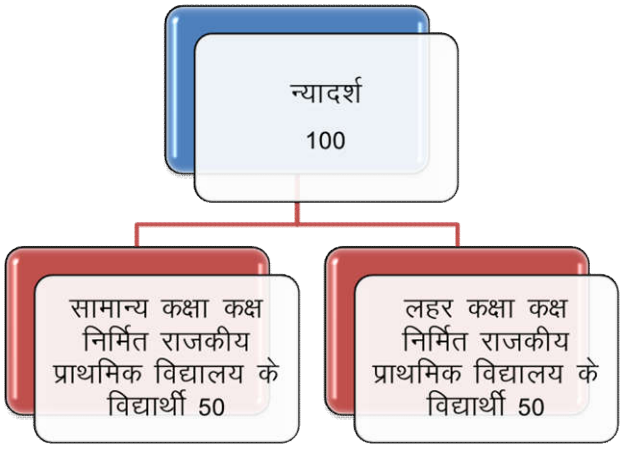

शोध में प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति हेतु स्वनिर्मित उपकरण (प्रश्नावली) का प्रयोग किया गया।

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी–

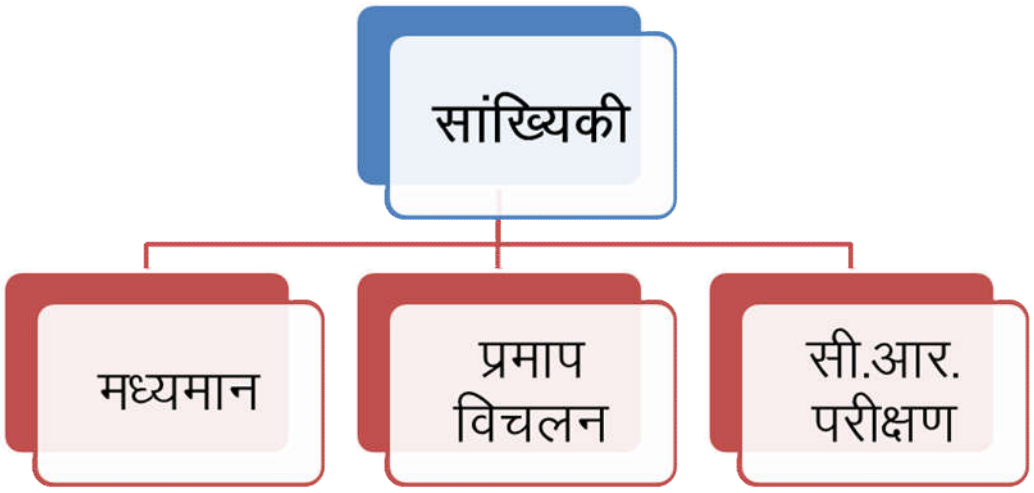

प्रदत्त संचयन व विश्लेषण–

1. शोधकर्त्री द्वारा सर्वप्रथम जयपुर शहर का चयन किया गया, जिसमें शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श के लिए 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

2. शोधकर्त्री द्वारा शोध कार्य में उपकरण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया, जिसमें 20 कथनों को निर्मित किया गया जो कि हिन्दी, अंग्रेजी तथा गणित विषय से सम्बन्धित थे। इस प्रश्न–पत्र को प्रशासित करने से पूर्व सभी विद्यार्थियों को सामान्य निर्देश दिये गये।
3. सभी विद्यार्थियों को चित्र आधारित प्रश्न–पत्र के अनुरूप उत्तर देने के निर्देश दिये गये।
4. तत्पश्चात् उपलब्धि मापनी का प्रशासन पूर्व नियोजित सूचना व कक्ष के अनुसार किया गया।
5. प्राप्त आँकड़ों का संकलन कर उनका मध्यमान, प्रमाप विचलन व टी. परीक्षण ज्ञात किया गया।
6. टी. परीक्षण के आधार पर प्रत्येक पद का विवेचन किया गया।
7. प्रदत्तों का प्रदर्शन ग्राफ डायग्राम के आधार पर किया गया।
8. विवेचन के आधार पर निष्कर्ष व परिणाम प्राप्त हुए।

शोध परिणाम–

परिकल्पना – 1 प्राथमिक स्तर पर सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालय व लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों व लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया जाता है, क्योंकि गणना करने पर प्राप्त आँकड़ों के अनुसार 'टी' का प्राप्त मूल्य 2.91 है जो 'टी' तालिक के 0.5 सार्थकता स्तर से अधिक है। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना – 2 प्राथमिक स्तर पर सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालय व लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक के विद्यार्थियों की अंग्रेजी विषय पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों व लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अंग्रेजी विषय में शैक्षिक

उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है, क्योंकि गणना करने पर प्राप्त 'टी' मूल्य 1.60 है, जो 'टी' तालिका के 0.5 सार्थकता स्तर से कम है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना – 3 प्राथमिक स्तर पर सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालय व लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक के विद्यार्थियों की गणित विषय पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों व लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया जाता है, क्योंकि आँकड़ों की गणना से प्राप्त 'टी' मूल्य 3. 80 है जो 'टी' तालिका के 0.5 सार्थकता स्तर से अधिक है। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना – 4 प्राथमिक स्तर पर सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों व लहर कक्षा कक्ष निर्मित सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों व लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया जाता है, क्योंकि प्राप्त आँकड़ों की गणना करने पर 'टी' मूल्य 5.60 प्राप्त हुआ है, जो 'टी' तालिका के 0.5 सार्थकता स्तर से अधिक है। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

शोध निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्त्री ने सांख्यिकी के द्वारा परिणामों का विवेचन व विश्लेषण किया है। सांख्यिकी विश्लेषण के उपरान्त शोधकर्त्री को निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. प्रारम्भिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाये जाने का कारण सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में सहशैक्षिक गतिविधियों का अभाव पाया जाता है, जबकि लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में गतिविधि आधारित शिक्षण प्रक्रिया होने के कारण हिन्दी विषय को स्पष्ट करने के लिए–कहानियों, चित्रों व रचनात्मक

क्रियाओं के माध्यम से शिक्षण कार्य करवाया जाता है, जिससे विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर पर प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी जाती है।

2. प्रारम्भिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नहीं पाये जाने का कारण सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में तथा लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अंग्रेजी विषय को स्पष्ट करने के लिये शिक्षण प्रक्रिया प्रभावी एवं रोचक है। अतः यही कारण है कि दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियेां की शैक्षिक उपलब्धि समान है।

3. प्रारम्भिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाये जाने का कारण सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में किसी प्रकार की सहायक शिक्षण सामग्री का प्रयोग नहीं किया जाता, जबकि लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में गणित विषय को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्रीयों यथा–अबेकस, लेडर चार्ट, माइल स्टोन आदि के द्वारा शिक्षण कार्य करवाया जाता है, जिससे कि विद्यालयों के विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि स्तर अधिक है। अतः यही कारण है कि दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि स्तर असमान है।

4. प्रारम्भिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाये जाने का मुख्य कारण सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण सहायक सामग्रीयों तथा गतिविधि आधारित शिक्षण प्रक्रिया का अभाव होने के कारण इन विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम पाई जाती है, जबकि लहर कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के द्वारा एवं आकर्षक कक्षा कक्ष के माध्यम से स्वअधिगम हेतु प्रेरित किया जाता है। शिक्षण सहायक सामग्रीयों के माध्यम से विषय–वस्तु को स्पष्ट करवाया जाता है, जिससे इन विद्यालयों की शिक्षण प्रक्रिया रोचक एवं प्रभावी है। अतः यही कारण है कि सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों व लहर कक्षा कक्ष

निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया जाता है।

शैक्षिक निहितार्थ–

शिक्षा शास्त्र, समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान आदि विषयों से सम्बन्धित शोध प्रयास तब तक अर्थपूर्ण नहीं होते, जब तक कि इनका संबंधित क्षेत्र से प्राप्त निष्कर्षों एवं परिणामों का शैक्षिक निहितार्थ न हो, नहीं तो शोधकर्त्री द्वारा किया गया शोधकार्य व्यर्थ चला जाता है। अतः प्रस्तुत शोध के शिक्षा में निम्नलिखित निहितार्थ होंगें।

1. **शिक्षण संस्थान व प्रबन्धन**– शिक्षण संस्थान व प्रबन्धन की विद्यार्थियों के लिए समय–समय पर सह–शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन करवाने हेतु प्रस्तुत शोध प्रेरित कर सकेगा। शिक्षण संस्थान अपने विद्यालय के भौतिक एवं मानवीय संसाधनों की गुणवत्ता को भी बढ़ा सकेंगे तथा विद्यार्थियों के लिए गतिविधि आधारित शिक्षण प्रक्रिया को बढ़ा सकेंगे। इस प्रकार के शोध कार्यों से शिक्षण संस्थान ऐसे शिक्षागत वातावरण का निर्माण कर सकेंगें, जो बालकों को स्वयं करके सीखने को प्रेरित करता हो तथा उनके स्तर के अनुरूप हो।
2. **विद्यार्थी**– प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध विद्यार्थियों को विभिन्न बालोपयोगी शिक्षण पद्धतियों व नवाचारों के प्रयोग द्वारा अधिगम करने व सीखने को प्रेरित कर सकेगा। तथा शोध कार्य विद्यार्थियों को अधिक से अधिक संख्या में विद्यालय आने हेतु प्रेरित कर सकेगा तथा उनकी शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि कर सकेगा। इस प्रकार के कक्षा–कक्षों द्वारा विद्यार्थी अध्ययन में रूचि विकसित होगी तथा स्वअधिगम कर सकेगा।
3. **प्रधानाचार्य, शिक्षक व शिक्षा व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों हेतु निहितार्थ**–प्रधानाचार्य, शिक्षक, प्रशिक्षक व शिक्षा व्यवसाय से जुड़े प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सभी व्यक्ति विद्यालयों का शिक्षागत वातावरण गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अनुरूप इस प्रकार निर्मित कर सकेंगें जिससे विद्यार्थी एवं अधिगम कर सके तथा उसका सर्वांगीण विकास हो सके। इस प्रकार के कक्षा कक्षों के माध्यम से विद्यार्थी की सृजनात्मकता, क्रियाशीलता, कुशलता मानसिक एवं शारीरिक क्षमताओं का विकास करके प्रभावी शिक्षण

कार्य करवाया जा सकता है। क्योंकि सामान्य कक्षा कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों से प्राप्त प्रदत्त संकलन के समय शोधकर्त्री ने पाया कि इन विद्यालयों के कक्षा कक्षों में शिक्षण सहायक सामग्रीयों का अभाव तथा नवाचारी शिक्षण विधियों की रिक्तता देखने को मिली जो विद्यार्थियों के चहुँमुखी विकास को प्रभावित करती है। अतः प्राथमिक स्तर पर इन समस्याओं में सुधार कर विद्यार्थियों को नवाचारी विधियों द्वारा स्व अधिगम हेतु लहर कक्ष जैसे आकर्षक कक्षा कक्ष का निर्माण कर उनका सर्वांगीण विकास किया जा सकता है।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव–

कोई भी शोध कार्य अपने आप में सम्पूर्णता लिये नहीं हो सकता है। प्रस्तुत शोध कार्य भी 'लहर कक्ष' के द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को जानने का एक लघु प्रयास है। भावी शोधकर्ता इस सम्बन्ध में अध्ययन के लिए निम्नलिखित तथ्यों पर गौर कर सकते है–

1. भविष्य में इसे व्यापक करते हुए बड़े न्यादर्श का चयन कर इसका विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।
2. भविष्य में लहर कक्ष जैसी अन्य योजनाओं पर अध्ययन किया जा सकता है।
3. भावी शोध कार्य हेतु 'लहर' कक्ष संचालित विद्यालयों को प्रदान की जाने वाली अधिगम सामग्री की उपादेयता के विषय में अध्ययन किया जा सकता है।
4. भावी अध्ययनों में सर्वशिक्षा अभियान के तहत् 'लहर' कक्ष की सफलता व असफलता का अध्ययन किया जा सकता है।
5. शोधार्थी ने इस शोध कार्य हेतु जनसंख्या कम ली है, भावी शोधार्थी द्वारा अधिक जनसंख्या लेकर शोध कार्य किया जा सकता है।
6. भावी शोध कार्य हेतु सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत संचालित लहर कक्ष के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर विद्यालयी वातावरण तथा विद्यार्थियों के नामांकन तथा ठहराव का अध्ययन किया जा सकता है।
7. भविष्य में यह अध्ययन छात्र–छात्राओं की अलग–अलग शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने हेतु किया जा सकता है।

8. औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा कक्षा कक्षों का तुलनात्मक अध्ययन भावी शोध हेतु किया जा सकता है।
9. भावी शोधार्थी प्राथमिक स्तर पर शिक्षण के नवाचार की आवश्यकता एवं प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
10. 'लहर' कक्ष में दी जाने वाली शिक्षा का छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
11. 'लहर' कक्ष के अन्तर्गत ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि व रचनात्मक कौशल विकास का अध्ययन किया जा सकता है।

उपसंहार–

प्रस्तुत अध्याय में पूर्व के चार अध्यायों को सारांश रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध के परिणामों को अंतिम सत्य नही माना जाए, क्योंकि कोई भी ग्रन्थ अपने आपमें पूर्ण नहीं होता। इसमें कुछ न कुछ त्रुटि होने की सम्भावनाएँ अवश्यक होती है। अतः शोधकर्त्री ने यह आशा व्यक्त की है, यदि ये लघु शोध प्रबन्ध आगे अन्य अनुसंधानकर्ताओं को अध्ययन हेतु प्रेरित कर शिक्षा जगत को लाभान्वित कर सकेगा तो यह प्रयास सफल एवं सार्थक होगा। प्रारंभिक स्तर पर इस प्रकार के कक्षा कक्षों के संदर्भ में शोधकर्त्री कुछ सुझाव प्रेषित कर रहीं है यदि इन सुझावों का नियमन किया जाये तो प्रारंभिक स्तर पर गतिविधि आधारित लहर कक्ष की सफलता निश्चित रूप से संभव है।

1. सामान्य कक्ष निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में भी गतिविधि आधारित आकर्षक कक्षा कक्ष का निर्माण किया जाना चाहियें।
2. राजस्थान सरकार को अधिक से अधिक विद्यालयों को इन परियोजनाओं में शामिल किया जाना चाहिये।
3. लहर कक्ष में उपलब्ध सामग्री को और अधिक रोचक तथा प्रभावी बनाया जाना चाहिये।
4. लहर कार्यक्रम जैसी परियोजनाओं को पुनः प्रारंभ किया जाना चाहिये जिससे विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि स्तर प्रभावित हो सके।